

हबक्कूक

नबी की शिकायत : हर तरफ़ नाइनसाफ़ी

1 ज़ैल में वह कलाम कलमबंद है जो हबक्कूक नबी को रोया देखकर मिला।

2 ऐ रब, मैं मज़ीद कब तक मदद के लिए पुकारूँ? अब तक तूने मेरी नहीं सुनी। मैं मज़ीद कब तक चीखें मार मारकर कहूँ कि फ़साद हो रहा है? अब तक तूने हमें छुटकारा नहीं दिया।

3 तू क्यों होने देता है कि मुझे इतनी नाइनसाफ़ी देखनी पड़े? लोगों को इतना नुक़सान पहुँचाया जा रहा है, लेकिन तू ख़ामोशी से सब कुछ देखता रहता है। जहाँ भी मैं नज़र डालूँ, वहाँ जुल्मो-तशद्दुद ही नज़र आता है, मुक़दमाबाज़ी और झगड़े सर उठाते हैं।

4 नतीजे में शरीअत बेअसर हो गई है, और बा-इनसाफ़ फैसले कभी जारी नहीं होते। बेदीनों ने रास्तबाज़ों को घेर लिया है, इसलिए अदालत में बेह्दा फैसले किए जाते हैं।

अल्लाह का जवाब

5 “दीगर अक्रवाम पर निगाह डालो, हाँ उन पर ध्यान दो तो हक्का-बक्का रह जाओगे। क्योंकि मैं तुम्हारे जीते-जी एक ऐसा काम करूँगा जिसकी जब ख़बर सुनोगे तो तुम्हें यक़ीन नहीं आएगा।

6 मैं बाबलियों को खड़ा करूँगा। यह ज़ालिम और तलख़रू कौम पूरी दुनिया को उबूर करके दूसरे ममालिक पर कब्ज़ा करेगी।

7 लोग उससे सख़्त दहशत खाएँगे, हर तरफ़ उसी के क़वानीन और अज़मत माननी पड़ेगी।

8 उनके घोड़े चीतों से तेज़ हैं, और शाम के वक़्त शिकार करनेवाले भेड़ीए भी उन जैसे फ़ुरतीले नहीं होते। वह सरपट दौड़कर दूर दूर से आते हैं। जिस तरह उकाब लाश पर झपट्टा मारता है उसी तरह वह अपने शिकार पर हमला करते हैं।

9 सब इसी मक़सद से आते हैं कि जुल्मो-तशद्दुद करें। जहाँ भी जाएँ वहाँ आगे बढ़ते जाते हैं। रेत जैसे बेशुमार कैदी उनके हाथ में जमा होते हैं।

10 वह दीगर बादशाहों का मजाक उड़ाते हैं, और दूसरों के बुजुर्ग उनके तमस्खुर का निशाना बन जाते हैं। हर किले को देखकर वह हँस उठते हैं। जल्द ही वह उनकी दीवारों के साथ मिट्टी के ढेर लगाकर उन पर कब्जा करते हैं।

11 फिर वह तेज हवा की तरह वहाँ से गुज़रकर आगे बढ़ जाते हैं। लेकिन वह कुसूरवार ठहरेंगे, क्योंकि उनकी अपनी ताकत उनका ख़ुदा है।”

ऐ रब, तू क्यों ख़ामोश रहता है?

12 ऐ रब, क्या तू कदीम ज़माने से ही मेरा ख़ुदा, मेरा कुद्स नहीं है? हम नहीं मरेंगे। ऐ रब, तूने उन्हें सज़ा देने के लिए मुर्कर किया है। ऐ चट्टान, तेरी मरज़ी है कि वह हमारी तरबियत करें।

13 तेरी आँखें बिलकुल पाक हैं, इसलिए तू बुरा काम बरदाश्त नहीं कर सकता, तू ख़ामोशी से जुल्मो-तशद्दुद पर नज़र नहीं डाल सकता। तो फिर तू इन बेवफ़ाओं की हरकतों को किस तरह बरदाश्त करता है? जब बेदीन उसे हड़प कर लेता जो उससे कहीं ज़्यादा रास्तबाज़ है तो तू ख़ामोश क्यों रहता है?

14 तूने होने दिया है कि इन्सान से मछलियों का-सा सुलूक किया जाए, कि उसे उन समुंदरी जानवरों की तरह पकड़ा जाए, जिनका कोई मालिक नहीं।

15 दुश्मन उन सबको काँटे के ज़रीए पानी से निकाल लेता है, अपना जाल डालकर उन्हें पकड़ लेता है। जब उनका बड़ा ढेर जमा हो जाता है तो वह खुश होकर शादियाना बजाता है।

16 तब वह अपने जाल के सामने बख़ूर जलाकर उसे जानवर कुरबान करता है। क्योंकि उसी के वसीले से वह ऐशो-इशरत की ज़िंदगी गुज़ार सकता है।

17 क्या वह मुसलसल अपना जाल डालता और कौमों को बेरहमी से मौत के घाट उतारता रहे?

2

1 अब मैं पहरा देने के लिए अपनी बुर्जी पर चढ़ जाऊँगा, किले की ऊँची जगह पर खड़ा होकर चारों तरफ देखता रहूँगा। क्योंकि मैं जानना चाहता हूँ कि अल्लाह मुझे क्या कुछ बताएगा, कि वह मेरी शिकायत का क्या जवाब देगा।

रब का जवाब

2 रब ने मुझे जवाब दिया, “जो कुछ तूने रोया मैं देखा है उसे तख्तों पर यों लिख दे कि हर गुज़रनेवाला उसे ख़ानी से पढ़ सके।

3 क्योंकि वह फौरन पूरी नहीं हो जाएगी बल्कि मुकर्ररा वक्त पर आखिरकार जाहिर होगी, वह झूटी साबित नहीं होगी। गो देर भी लगे तो भी सब्र कर। क्योंकि आनेवाला पहुँचेगा, वह देर नहीं करेगा।

4 मग़स्स आदमी फूला हुआ है और अंदर से सीधी राह पर नहीं चलता। लेकिन रास्तबाज़ ईमान ही से जीता रहेगा।

5 यक्रीनन मैं एक बेवफ़ा साथी है। मग़स्स शख्स जीता नहीं रहेगा, गो वह अपने मुँह को पाताल की तरह खुला रखता और उस की भूक मौत की तरह कभी नहीं मिटती, वह तमाम अक्रवाम और उम्मतेँ अपने पास जमा करता है।

बेदीनों का अंजाम

6 लेकिन यह सब उसका मज़ाक़ उड़ाकर उसे लान-तान करेंगी। वह कहेंगी, 'उस पर अफ़सोस जो दूसरों की चीज़ें छीनकर अपनी मिलकियत में इज़ाफ़ा करता है, जो कर्ज़दारों की ज़मानत पर कब्ज़ा करने से दौलतमंद हो गया है। यह काररवाई कब तक जारी रहेगी?'

7 क्योंकि अचानक ही ऐसे लोग उठेंगे जो तुझे काटेंगे, ऐसे लोग जाग उठेंगे जिनके सामने तू थरथराने लगेगा। तब तू खुद उनका शिकार बन जाएगा।

8 चूँकि तूने दीगर मुतअद्दिद अक्रवाम को लूट लिया है इसलिए अब बची हुई उम्मतेँ तुझे ही लूट लेंगी। क्योंकि तुझसे क़त्लो-ग़ारत सरज़द हुई है, तूने देहात और शहर पर उनके बाशिंदों समेत शदीद जुल्म किया है।

9 उस पर अफ़सोस जो नाजायज़ नफ़ा कमाकर अपने घर पर आफ़त लाता है, हालाँकि वह आफ़त से बचने के लिए अपना घोंसला बुलंदियों पर बना लेता है।

10 तेरे मनसूबों से मुतअद्दिद कौमें तबाह हुई हैं, लेकिन यह तेरे ही घराने के लिए शर्म का बाइस बन गया है। इस गुनाह से तू अपने आप पर मौत की सज़ा लाया है।

11 यक्रीनन दीवारों के पत्थर चीखकर इल्तिजा करेंगे और लकड़ी के शहतीर जवाब में आहो-ज़ारी करेंगे।

12 उस पर अफ़सोस जो शहर को क़त्लो-ग़ारत के ज़रीए तामीर करता, जो आबादी को नाइनसाफी की बुनियाद पर कायम करता है।

13 रब्बुल-अफ़वाज ने मुकर्रर किया है कि जो कुछ कौमों ने बड़ी मेहनत-मशक्क़त से हासिल किया उसे नज़रे-आतिश होना है, जो कुछ पाने के लिए उम्मतेँ थक जाती हैं वह बेकार ही है।

14 क्योंकि जिस तरह समुंदर पानी से भरा हुआ है, उसी तरह दुनिया एक दिन रब के जलाल के इफ्रान से भर जाएगी।

15 उस पर अफ़सोस जो अपना प्याला ज़हरीली शराब से भरकर उसे अपने पड़ोसियों को पिला देता है ताकि उन्हें नशे में लाकर उनकी बरहनगी से लुत्फ़अंदोज़ हो जाए।

16 लेकिन अब तेरी बारी भी आ गई है! तेरी शानो-शौकत ख़त्म हो जाएगी, और तेरा मुँह काला हो जाएगा। अब खुद पी ले! नशे में आकर अपने कपड़े उतार ले। ग़ज़ब का जो प्याला रब के दहने हाथ में है वह तेरे पास भी पहुँचेगा। तब तेरी इतनी स्स्वाई हो जाएगी कि तेरी शान का नामो-निशान तक नहीं रहेगा।

17 जो जुल्म तूने लुबनान पर किया वह तुझ पर ही ग़ालिब आएगा, जिन जानवरों को तूने वहाँ तबाह किया उनकी दहशत तुझी पर तारी हो जाएगी। क्योंकि तुझसे कत्लो-गारत सरज़द हुई है, तूने देहात और शहरों पर उनके बाशिंदों समेत शदीद जुल्म किया है।

18 बुत का क्या फ़ायदा? आखिर किसी माहिर कारीगर ने उसे तराशा या ढाल लिया है, और वह झूट ही झूट की हिदायात देता है। कारीगर अपने हाथों के बुत पर भरोसा रखता है, हालाँकि वह बोल भी नहीं सकता!

19 उस पर अफ़सोस जो लकड़ी से कहता है, ‘जाग उठ!’ और ख़ामोश पत्थर से, ‘खड़ा हो जा!’ क्या यह चीज़ें हिदायत दे सकती हैं? हरगिज़ नहीं! उनमें जान ही नहीं, ख़ाह उन पर सोना या चाँदी क्यों न चढ़ाई गई हो।

20 लेकिन रब अपने मुक़द्दस घर में मौजूद है। उसके हुज़ूर पूरी दुनिया ख़ामोश रहे।”

3

हबक्कूक की दुआ

1 ज़ैल में हबक्कूक नबी की दुआ है। इसे ‘शिगियूनोत’ के तर्ज़ पर गाना है।

2 ऐ रब, मैंने तेरा पैग़ाम सुना है। ऐ रब, तेरा काम देखकर मैं डर गया हूँ। हमारे जीते-जी उसे वुजूद में ला, जल्द ही उसे हम पर जाहिर कर। जब तुझे हम पर गुस्सा आए तो अपना रहम याद कर।

3 अल्लाह तेमान से आ रहा है, कुदूस फ़ारान के पहाड़ी इलाके से पहुँच रहा है। (सिलाह) * उसका जलाल पूरे आसमान पर छा गया है, ज़मीन उस की हम्दो-सना से भरी हुई है।

4 तब उस की शान सूरज की तरह चमकती, उसके हाथ से तेज़ किरणें निकलती हैं जिनमें उस की कुदरत पिनहाँ होती है।

5 मोहलक बीमारी उसके आगे आगे फैलती, वबाई मरज़ उसके नक्शे-कदम पर चलता है।

6 जहाँ भी क़दम उठाए, वहाँ ज़मीन हिल जाती, जहाँ भी नज़र डाले वहाँ अक्वाम लरज़ उठती हैं। तब क़दीम पहाड़ फट जाते, पुरानी पहाड़ियाँ दबक जाती हैं। उस की राहें अज़ल से ऐसी ही रही हैं।

7 मैंने क़शान के ख़ैमों को मुसीबत में देखा, मिदियान के तंबू काँप रहे थे।

8 ऐ रब, क्या तू दरियाओं और नदियों से गुस्से था? क्या तेरा ग़ज़ब समुंदर पर नाज़िल हुआ जब तू अपने घोड़ों और फ़तहमंद रथों पर सवार होकर निकला?

9 तूने अपनी क़मान को निकाल लिया, तेरी लानतें तीरों की तरह बरसने लगी हैं। (सिलाह) तू ज़मीन को फाड़कर उन जगहों पर दरिया बहने देता है।

10 तुझे देखकर पहाड़ काँप उठते, मूसलाधार बारिश बरसने लगती और पानी की गहराइयाँ गरजती हुई अपने हाथ आसमान की तरफ़ उठाती हैं।

11 सूरज और चाँद अपनी बुलंद रिहाइशगाह में रुक जाते हैं। तेरे चमकते तीरों के सामने वह माँद पड़ जाते, तेरे नेज़ों की झिलमिलाती रौशनी में ओझल हो जाते हैं।

12 तू गुस्से में दुनिया में से गुज़रता, तैश से दीगर अक्वाम को मारकर गाह लेता है।

13 तू अपनी क़ौम को रिहा करने के लिए निकला, अपने मसह किए हुए ख़ादिम की मदद करने आया है। तूने बेदीन का घर छत से लेकर बुनियाद तक गिरा दिया, अब कुछ नज़र नहीं आता। (सिलाह)

* **3:3** सिलाह ग़ालिबन गाने बजाने के बारे में कोई हिदायत है। मुफ़स्सिरिन में इसके मतलब के बारे में इतफ़ाके-राय नहीं होती।

14 उसके अपने नेजों से तूने उसके सर को छेद डाला। पहले उसके दस्ते कितनी खुशी से हम पर टूट पड़े ताकि हमें मुंतशिर करके मुसीबतजदा को पोशीदगी में खा सकें! लेकिन अब वह खुद भूसे की तरह हवा में उड़ गए हैं।

15 तूने अपने घोड़ों से समुंदर को यों कुचल दिया कि गहरा पानी झाग निकालने लगा।

अल्लाह मुझे तकवियत देता है

16 यह सब कुछ सुनकर मेरा जिस्म लरज़ उठा। इतना शोर था कि मेरे दाँत बजने लगे, † मेरी हड्डियाँ सड़ने लगी, मेरे घुटने काँप उठे। अब मैं उस दिन के इंतज़ार में रहूँगा जब आफत उस क्रौम पर आएगी जो हम पर हमला कर रही है।

17 अभी तक कौपलें अंजीर के दरख्त पर नज़र नहीं आती, अंगूर की बेलें बेफल हैं। अभी तक जैतून के दरख्त फल से महरूम हैं और खेतों में फ़सलें नहीं उगती। बाड़ों में न भेड़-बकरियाँ, न मवेशी हैं।

18 ताहम मैं रब की खुशी मनाऊँगा, अपने नजातदहिदा अल्लाह के बाइस शадियाना बजाऊँगा।

19 रब कादिरे-मुतलक मेरी कुव्वत है। वही मुझे हिरनों के-से तेज़रौ पाँव मुहैया करता है, वही मुझे बुलंदियों पर से गुज़रने देता है।

दर्जे-बाला गीत मौसीकी के राहनुमा के लिए है। इसे मेरे तर्ज़ के तारदार साज़ों के साथ गाना है।

† 3:16 लफज़ी तरजुमा : होंट हिलने लगे।

किताबे-मुकद्दस

**The Holy Bible in the Urdu language, Urdu Geo
Version, Hindi Script**

Copyright © 2019 Urdu Geo Version

Language: उर्दू (Urdu)

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution-Noncommercial-No Derivatives license 4.0.

You may share and redistribute this Bible translation or extracts from it in any format, provided that:

You include the above copyright and source information.

You do not sell this work for a profit.

You do not change any of the words or punctuation of the Scriptures.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

2024-09-20

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 1 Jul 2025 from source files dated 20 Sep 2024

a1ee0020-7263-5fce-8289-9d7a7ac2d299